"वेदा"

भारतीय अध्यात्मिक दर्शन, कला, संस्कृति और सभ्यता के स्वरूप की हम यदि भारतीय तत्वज्ञान की मीमांसा के आधार पर देखें तो हमें सर्व प्रथम यह तथ्य दिखेगा कि आद्याशक्ति प्रकृति है और मंगलमय प्रकृति ही सनातन शक्ति है। इसी कारण से शक्ति को सम्पूर्ण संसार में प्रमुख स्थान दिया गया है। यही प्रकृति आगे चलकर मातृशक्ति के रूप में हमारें सामने आई- चाहे मिश्र में हो चाहे मेसोपोटामिया, ईरान तथा प्रागैतिहासिक भारतीय कला में शक्ति सत्व मूर्त और अमूर्त दोनों रूपों में हमारे सामने दिखाई देता है वैदिक संस्कृति में देवी शक्ति की आराधना से उस प्रधान आर्य भाव का संकेत मिलता है जो सृष्टि सृजन के स्वरूप का अधिशासी है - शिवलिंग के साथ जो योनि को शक्ति तत्व के रूप में स्थान दिया गया ऋग्वेद के दशम मंडल के देवीसूक्त से यह स्पष्ट हो जाता है कि देवता, मनुष्य तथा पशु के मूलतत्व में शक्ति भावना निहित है। प्रागैतिहासिक युग में कला का विकास न होने से मिट्टी की मातृदेवी बनने लगी थी। पुराणों में इसी शक्ति का वर्णन अनेंक रूपों में मिलता है। कार्तिक की पष्ठी। अग्नि की स्वाहा, यज्ञ की दक्षिणा, गणेश की प्रष्टि काम की रति, पुण्य की प्रतिष्ठा आदि उनकी शक्तियां हैं। मध्ययुग में ब्राह्मण मत, महायान तथा वज्रयान में तांत्रिकपूजा का विधान था जोविशेष रूप से शत्रक्त के उपासक थे। उत्तरवैदिक काल में अम्बिका, उमा दुर्गा आदि के नाम ब्राह्मण ग्रंथों में मिलती हैं। केनोपनिषद में उमा को ब्रह्मविद्या का मानुषी रूप कहा गया है। वेदांत में भी महामाया का नाम आया है। भारतीय इतिहास के स्वर्णकाल गुप्त युग में शक्ति सिद्धान्त को प्रमुखता दी गई है शक्ति के सहयोग से ही देवता गण समर्थ माने गये हैं। यहीं से देव तथा शक्ति के समन्वयात्मक स्वरूप का रहस्य उजागर होता हैं। यही शिवशक्ति का स्वरूप है कुषाणकालीन सोने के सिक्कों पर आरडाक्षो नामक देवी की प्रतिमा खुदी है जो वैभव और रक्षा की देवी थी। गुप्तयुग की उदयगिरि नामक गुफा में दुर्गा की आकृति है। मध्ययुग के वज्रयान देवसमूह में तारा अपराजिता मारीचि आदि देवियाँ का अंकन हुआ है। नालंदा से पार्वती की प्रतिमा प्राप्त हुई हैं। ११ वीं शताब्दी की पार्वती प्रतिमा विशिष्ट है जिसके सिरोभाग में गणेश, शिव ब्रह्मा और विष्णु दिख रहे हैं। इनके ललाट पर तीसरा नेत्र दिखाया गया है। कहीं कहीं युगल मूर्तियों का निर्माण भी दिखाई देता है। विष्णु की लक्ष्मी, शिव की पार्वती, रूद्र की दुर्गा आदि प्रतिमायें विशिष्ट हैं। इससे अर्धनारीश्वर का स्वरूप भी आगे चलकर विकसित हुआ शक्ति मत वाले देवी के प्रतीक चक्र तथा यंत्र का पूजन भी करते

थे। राक्षस महिष को मारने के कारण दुर्गा का नाम महिषासुर मर्दिनी पड़ा।

भारतीय कला के अंतर्गत गुप्तकाल में सर्वप्रथम अष्टभुजा दुर्गा का अंकन पाषाण में हुआ। दुर्गा की दो तरह की प्रतिमायें मिलती है (१) उग्ररूपवाली (२) सौम्य रूप वाली/दो भुजा से ३२ भुजा तक की मूर्तियाँ प्राप्त हुईं। भुजाओं की संख्या देवी के आयुधों पर निर्भर करती थी जिनमें पाश, अंकुश, शंख खड्ग माला, वाण, धनुष आदि की प्रधानता रहती थी कुछ हाथ वरद तथा अन्य मुद्रा में भी दिखाई देते हैं। उत्तर भारत से लेकर वंगाल तथा बिहार में महिषासुर का वध करती प्रतिमायें हैं। दक्षिण भारत के अयहाले (आंध्रप्रदेश) महावलिपुरम (मद्रास) तथा उड़ीसा की प्रतिमायें विशिष्ट हैं। विहार से पालयुग की चतुर्भुज प्रतिमा मिली है जो सिंह की पीठ पर बैठी है ढाल तलवार त्रिशूल लिये हुए चौथा हाथ बरव मुद्रा में है। नवदुर्गा के अन्तर्गत, शैलपुरी ब्रम्हाधारिणी, चंद्रघंटा, कूष्पाण्डा, स्कन्दमाता, कात्यायिनी, कालरात्रि, महागौरी, सिद्धिदात्री का उल्लेख भी है। काली महाकाली, भद्रकाली का स्वरूप भी दर्शाया गया है। एकप्रतिमा नरमुंड धारण किये हुए है। वाराह पुराण के एक वर्णन के आधार पर जब वैष्णवी तपस्या कर रही थी तब अनेंक सुन्दर देवियां वहां उपस्थित थी। महिषासुर उन देवियों को हरण करने की मंशा से वहां गया जिसकी सूचना मिलते ही दुर्गा ने महिषासुर को नष्ट कर दिया-महिषासुर को काला-काल अंधकार अज्ञान माना गया है जिसे दुर्गा दिव्य ओजस रूप धारण करके नष्ट करती है। महासरस्वती, महा-काली, महालक्ष्मी का स्वरूप भी उसी समय धातु से पाषाणों तक में उतीर्ण हुआ गजलक्ष्मी का स्वरूप श्री सिद्धि के रूप में आया देवी के अनेंक मार्गों से मूर्तियां बनीं जैसे-पार्वतीन्यवर्तंत की पुत्री गिरिजापर्वत से उत्पन्न गौरीन्गोरवर्ण वाली उमान्शांति, अम्बिकामाता, जगद्मातान्विश्व की आदिजननी भवानीन्मव से संबंधित कन्याकुमारी। बालिका कन्या अन्नपूर्णा अन्न देने वाली सर्वमंगला, सदा शुभकरने वाली दुर्गा, अगम्य, चंडी उग्रभैरवी, भयंकर महेश्वरी का स्वरूप देवियों के साथ आता है जिनमें (१) ऐन्द्री (२) वैष्णवी (३) रोद्री (४) कौमारी (५) ब्राह्मी (६) यामी (७) वारूणी कला में सप्तमातुकाओं कै साथ वीरभद्र और गणेश जी भी पाये जाते हैं। वराहपुराण के अनुसार मातुका के चार हाथ हैं। गोद में शिशु दिखाई पड़ते हैं। प्रतिमा की पीठ पर संबंधित आसन वाहनों के साथ खुदे हैं। एलीफेन्टा गुफा में देवियों के वाहन उनके ध्वज पर अंकित हैं - जबलपुर के पास मेड़ाघाट में चौसठ योगिनी मंदिर में सप्तमातुका नृत्य करते हुए दिखाई देती हैं। इसके अंदर दशमहाविधाओं का क्रम आता है। दार्शनिक मान्यता यह है कि नियति का क्रम कालचक्र दिया रात्रि के सहस चक्र से चलता रहता है इसे दश उपविभाग में विभक्त किया गया है। पांच विभाग शिव से और पांच शक्ति से संबंधित हैं। इन दश महाविधाओं से ही विश्व के शक्ति रहस्य की जानकारी का पता चलता है। इन दश महाविधाओं के कारण ही जगत को गति और स्पंदन का ज्ञान हो पाता है। इन्हें ही ज्ञान का मूल माना गया है। दश महाविधाओं में शक्ति तत्व की प्रधान्नता इस प्रकार है १. महाकाली-महाशक्ति, २. तारा-शुधाशक्ति, ३. षेड़शी पूर्णशक्ति, ४. भुवनेश्वरी- ज्ञानशक्ति, ५. कित्रमस्ता - त्यागशक्ति ६. भैरवी-मरणा-शक्ति, ७. घूमावती-दरिद्रशक्ति, ८. बगला - कूरशक्ति, ९. मातंगी-प्रभावशक्ति, १०. कमला- ऐश्वर्यशक्ति।

शिव की प्रधान शक्ति को ही महाकाली कहा गया है यह काल की अधिष्ठात्री है। इसका शरीर उग्र बिवूहा निकाल, मुंडमाल धारण किये हाथों में तलवार दाये में नरमुंड धारण किये है। इसका दार्शनिक रहस्य यह है कि काली की चार भुजायें चार दिशाओं की द्योतक है, संसार से निर्लेप होकर आश्चर्य से जिव्हा निकाले दिख पड़ती है। शिव के समान शमशान में निवास करने वाली नरमुंह को धारण करके यह बता रही है कि काल से कोई नही बच सकता। तलवार विनाश का साधन है। महाकाली शवपर खड़ी हैं। इसका रहस्य यह है कि काल से बली कोई नहीं है - अर्थात् शव वन कर इस पृथ्वी में सभीको जाना है। काल सदृश कालिका से कोई नहीं बच सकता.... असार संसार के सार का यह रहस्य तत्व है। काली के हाथ में प्रज्जवलित अग्नि भय का संचार शक्ति, के रूप में करती है देवी काली को मनुष्य का रक्षक और भक्षक दोनों माना जाता है। उपनिषद में महाकाली को दिगम्बर कहा गया है। काल ही उसका वस्त्र है नंदी दुर्गा कुणीन्द सिक्कों पर तथा दुर्गा सिकुवाहिनी की प्रतिमायें अधिकतर राक्षसों का संहार करते हुए बतायी गई हैं, पर विदिशा से प्राप्त मूर्ति जो इस समय ग्वालियर संग्राहलय में है - इसे शृंगार दुर्गा कहा गया है - चतुर्भुज प्रतिमा के दाएं हाथ में कमल पुष्प है तथा दाहिने हाथ में अमृत पात्र है। ऊपर के शेष दो हाथों से ललाट टीका द्वारा माथे को सजा रही हैं। ब्रिटिश संग्रहालय में भी एक प्रतिमा इसी तरह की है। एकानेशा देवी जो आगे चलकर विंध्य वासिनी वन गई-इसका वर्णन भी प्राप्त होता है एकानेशांति विख्याता पर्वत्यश समदूभवा)

श्री दुर्गा के महिषासुर मर्दिनी स्वरूप का वृहत्तर भारत में विश्वव्यापी स्वरूप हम यदि देखे तो जावा सुमात्रा, वाली, वर्मा, थाईलैण्ड, कंबोडिया, चंपा मलाया, चीन अफगाणिस्तान, नेपाल तिब्बत मध्य एशिया आदि के भूभागों सें प्राचीन भारतीय कला का विस्तार हुआ वैष्णव धर्म, बौद्ध धर्म, शैव धर्म आदि का यहां मूर्तिकला औरसाहित्यजगत के माध्यम से हम विस्तार पाते हैं। प्राचीन भारतीय कलाकारों, मूर्तिकारों, एवं विद्वानों का आना जाना जहां प्राचीनकाल से लगा रहा ... यात्री जो कि एक विशेष

उद्देश्य को लेकर भारत में आये उनके माध्यम से भी यहां की संस्कृति, सभ्यता आदि का आदानप्रदान हुआ तंत्रयान मार्ग के तंत्र यानी देवी देवता का समादर तिव्वत में था। नेपाल में उमा महेश्वर की प्रतिमायें प्राप्त हुई। मलाया की खुदाई में शिव, गणेश नंदी तथा नटराज की मूर्ति भी मिली है। चंपा के राजा सत्यवर्धन के समय में शिव गणेश दुर्गा की प्रतिमायें स्थापित की गई। इन्द्रवर्मन के एकलेख में उमा। गौरी भगवती महामवती, मातृलिंगेश्वरी आदि के नाम ब्रह्मा तथा श्री के साथ मिलते हैं। कम्बुज के लेखों मे शिव गंगा विष्णु ब्रह्मा एवं उमा पार्वती की प्रार्थना की गई है। इस समय उमा महेश्वर की मूर्तियां लक्ष्मी विष्णु के साथ बनाई गई। जावा के गोरोबुदर मंदिर में ब्राह्मण देवी देवताओं के अनेक अंकन है जावा के कलसन लेख सें तारा की उपासना का वर्णन है। अन्य लेख में मंजुश्री की मूर्ति की स्थापना का उल्लेख है। हरिति गोद में बच्चों को लिये हुए है । मध्य जावा में शिव, दुर्गा गणेश, ब्रह्मा तथा विष्णु की प्रतिमायें है महादेव तथा पार्वती के सौम्य भाव को दर्शाया गया है। यहां की शक्ति, की प्रतिमाओं में महिषासुरमर्दिनी की मूर्ति विशेष है।

जगदंबा की प्रार्थना में विश्व जनीन मंगलमयता का स्वरूप देखने को मिलता है। कारण कि जगतमाता स्वयं सम्पूर्ण विश्व की पालनकर्ता है। कहा गया है।

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद
प्रसीद मातर्जगतो ऽरिवलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं
त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य ।।
विश्वेश्वरि त्वं परिपासि विश्वं
विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम्।
विश्वेशवन्द्या भवती भवन्ति
विश्वाश्रया ये त्वयि भन्लिनम्रा :।।

भक्तगण नवरात्रि में इस जगदंबा का स्तवन करते हुए कहते हैं कि काम योनि, योनि कमला, वज्र पाणि, गुहा, मतिरश्वा, अष्टवसु एकादश रुद्र, द्वादश आदित्य, विश्वमोहिनी, जगदम्बा की प्रार्थना करते हुए सभी के कल्याण की कामना करते हैं। अन्त में महिषासुर मर्दिनी सिंह वाहिनी की प्रार्थना -

ऊं सिंहस्था शशि शेखरा मरकप्रतख्यै र चतुर्भिभुर्जे :
शंखं चक्र धनुः शरांश्च दतीनेत्रस्त्रिभिः शोभिता।
आमुत्लांगदहार कंकण रणत्कांचीरणन्नूपुरा
दुर्गा दुर्गति हारिणी भवतु नो रत्नोल्लसत्कुंडला

अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां
चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्।
ताणा देवा व्यदधुः पुरूत्रा
भूरिस्थात्रां भूर्य्यावेशयन्तीम् ।।

जय जगदम्बा सिंहवाहिनी कृपादया की खान। महिषासुर का वध करे-करे सदा कल्यान ।। हाथ जोड़कर भक्त जन - करते भैया ध्यान ।। बुधि विद्या देओअब - रखो जगत का मान - जयति जय शुभ मंगल मंगलम् ।।

विद्यावाचस्पति
डॉ. राजेश कुमार उपाध्याय ''नर्मदेय''
श्री कृष्णार्जुन सदन
श्री राजेन्द्र चित्र मंदिर कें पिछे - शहडोल (म.प्र.) ४८४००१